Abhi International Journal of
Humanities and Law
(A Peer Review Journal)
journal homepage: https://abhijournals.com/index.php/aijhl

Volume 2, Issue 3, July-Sept 2026 ISSN : 3107-6793

हिंदी के विकास में पंजाब का योगदान

नवप्रीत कौर

एम.ए.हिंदी, गुरु काशी यूनिवर्सिटी, तलवंडी साबो, पंजाब

डॉ. राकेश कुमार सिंह

सह-प्राध्यापक, हिंदी विभाग,गुरु काशी यूनिवर्सिटी, तलवंडी साबो, पंजाब

ARTICLE INFO

Article History:
Received July 2, 2026
Revised July 6, 2026
Accepted July 10, 2026
Available online July 12, 2026

Keywords:
पंजाब, साहित्य,
भाषा, हिंदी,
हिंदी का विकास,
कवि,
लेखक,
साहित्यकार।

Correspondence:
E-mail: awgamer2006@gmail.com

ABSTRACT

पंजाब भारत का प्रवेश द्वार रहा है। पंजाब में विभिन्न संस्कृतियां, भाषाएं, धर्म आदि रहे हैं। पंजाब हमेशा से ही वीरता का प्रमाण देने के साथ-साथ अन्य प्रकार के कार्यों में भी योगदान देता रहा है। पंजाब में हिंदी के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी भाषा का जन्म पंजाब में हुआ और धीरे-धीरे इसका विस्तार हुआ। हिंदी की उत्तपति पंजाब से हुई। हिंदी के विकास में पंजाब का योगदान वीरगाथा काल, नाथ साहित्य, भक्ति काल में संत साहित्य, सिक्ख गुरुओं की वाणी, राम और कृष्ण साहित्य के साथ-साथ आधुनिक काल में भी देखने को मिला है। आधुनिक काल के कवियों ने हिंदी के विकास में पंजाब में बहुत योगदान दिया। पंजाब में हिंदी के विकास ने स्वतंत्रता आंदोलन के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता बनाए रखने के लिए भी योगदान दिया। स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी विचार विनिमय का एक प्रमुख साधन रही। जिसने लोगों को स्वतंत्रता आंदोलन के लिए प्रेरित किया।

इस शोध पत्र में हिंदी के विकास में पंजाब के योगदान का अध्ययन किया गया है।

1.भूमिका-

भाषा के माध्यम से व्यक्ति अपने-अपने विचारों को एक दूसरे के सामने प्रस्तुत करता है। भाषा विचारों के आदान-प्रदान करने का एक साधन है।हिंदी के विकास में हिंदी भाषा आंदोलन ने हिंदी को नई दिशा दी। भाषा आंदोलन से राष्ट्रीयता का विकास से हुआ, हिंदी को राष्ट्रभाषा/ राज्यभाषा बनाने के लिए प्रयास किए गए। हिंदी भाषा आंदोलन में स्वामी दयानंद सरस्वती, राजेंद्र प्रसाद, महात्मा गांधी, मदन मोहन मालवीय जैसे लोगों ने भरपूर योगदान दिया। हिंदी भाषा आंदोलन के कारण हिंदी भाषा को जन भाषा के रूप में स्वीकृत किया गया। हिंदी में शिक्षा का प्रावधान किया गया। हिंदी को मान-सम्मान मिला। स्वतंत्रता आंदोलन के लिए हिंदी ने लोगों को एकजुट करने का कार्य किया।

हिंदी के विकास में आर्य समाज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आर्य समाज का प्रभाव पंजाब में भी बहुत रहा है। पंजाब के कार्यों में बहुत से व्यक्तियों ने आर्य समाज के कार्यों में योगदान दिया। जैसे कि- लाला

लाजपत राय। आर्य समाज ने धर्म के विकास के साथ-साथ हिंदी का प्रचार प्रसार भी किया। उन्होंने शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए कई शिक्षण संस्थानों की स्थापना भी की। हिंदी को मान सम्मान दिलाने के लिए प्रयत्न किये। आर्य समाज ने धार्मिक ग्रंथो का सरल भाषा में प्रकाशन किया। वेदों का ज्ञान सरल भाषा में दिया गया। आर्य समाज के कार्य पंजाब में भी चलते रहे। बहुत से लोगों ने आर्य समाज के कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। आर्य समाज ने बहुत सी पत्रिकाएं हिंदी में प्रकाशित करवाई, जिससे हिंदी का विकास हुआ। आर्य समाज में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में समर्थन के लिए प्रेरित किया। आर्य समाज ने हिंदी साहित्य के विकास में योगदान दिया। बहुत से धार्मिक ग्रंथ, लेख, भाषण, निबंध हिंदी में लिखे गए, जो लोगों तक पहुंचे।

हिंदी भाषा का विकास पंजाब में हुआ। पंजाब में हिंदी भाषा का विकास अलग-अलग भाषाओं, संस्कृतियों के संपर्क का परिणाम है। हिंदी भाषा का विकास अनेक संस्कृतियों, सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तनों के साथ जुड़ा हुआ है।

नाथ साहित्य, वीरगाथा काल, संतपरंपरा, सिख गुरुओं की वाणी, आधुनिक काल, आधुनिक काल का कथा लेखन, काव्य लेखन के माध्यम से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। इन सभी साहित्य के माध्यम से हिंदी आम जनता तक पहुंचने लगी। नाथ साहित्य, सिख गुरुओं की वाणी, वीरगाथा काल के कवियों की भाषा में अन्य भाषाओं के साथ-साथ पुरानी हिंदी, ब्रज, संस्कृत, अवधी आदि भाषाओं के शब्द भी देखने को मिलते हैं।

आधुनिक काल में भक्ति, वीर साहित्य के साथ-साथ अन्य गद्य विधाएं भी शामिल हुई। पंजाब के कई साहित्यकारों ने नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध, संस्मरण, डायरी लेखन के साथ-साथ पंजाब का हिंदी साहित्य समृद्ध किया। पंजाब का विभाजन भी कई गद्य विधाओं में देखने को मिलता है। पंजाब के अनेक कवियों, लेखकों, लेखिकाओं ने हिंदी में कई कहानियां, उपन्यास, निबंध, डायरी लेखन, संस्मरण आदि लिखे। उनमें से कुछ साहित्यकारों का नाम इस प्रकार है- पंडित श्रद्धाराम फिलौरी, मोहन राकेश, अमृता प्रीतम, कृष्णा सोबती, शैली बलजीत, डॉ अजय शर्मा आदि।

2.विचार विमर्श

पंजाब का हिंदी भाषा और साहित्य में बहुत योगदान रहा है। वैसे तो पंजाब की मुख्य भाषा पंजाबी रही है। परंतु फिर भी पंजाब के बहुत से व्यक्तियों, लेखकों, साहित्यकारों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार और साहित्यिक लेखन में योगदान दिया है। वीरगाथा काल से लेकर आधुनिक काल तक पंजाब के विभिन्न साहित्यकारों ने हिंदी के विकास में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। आदिकाल से भक्ति काल तक बहुत से कवियों, संतों ने साहित्यक रचनाओं की, जिसमें हिंदी के शब्द देखने को मिलते हैं। संत परंपरा, सूफी परंपरा के कवियों ने हिंदी के विकास के योगदान के साथ-साथ सामाजिक बुराइयों को भी दूर करने का प्रयास किया। समाज में फैले अंधविश्वास, रूढ़िवादी विचारधारा, धार्मिक कर्मकांड आदि बुराइयों को दूर करने के प्रयास किए। परमात्मा की भक्ति के लिए लोगों को प्रेरित किया। लोगों में फैले जाति-पाति के भेदभाव को मिटाने के प्रयास किये। सिख गुरुओं की वाणी जैसे गुरु नानक देव जी, गुरु गोबिंद सिंह जी आदि गुरुओं की वाणी में लोकभाषा, संस्कृत, ब्रज और हिंदी के निकटतम शब्द देखने को मिलते हैं। इसके अतिरिक्त राम और कृष्णा साहित्य में भी कईयों ने हिंदी के विकास में योगदान दिया। इन कवियों की साहित्यक रचनाओं में भी हिंदी के शब्द देखने को मिलते हैं। पंजाब में सूफी परंपरा का भी बहुत प्रभाव रहा है। सूफी साहित्य के कवियों ने भी बहुत सी रचनाएं लिखी हैं,

जिस के माध्यम से उन्होंने परमात्मा की प्राप्ति प्रेम के माध्यम से की है। इन कवियों की रचनाओं में भी हिंदी के शब्द देखने को मिलते हैं।

आधुनिक काल में पंजाब के बहुत से साहित्यकारों ने अनेक साहित्यिक विधाओं में अपनी साहित्यिक रचनाएं लिखीं। जिस समय अनेक कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, संस्मरण, डायरी लेखन शामिल हैं। पंजाब में बहुत से लेखक हैं, जिन्होंने हिंदी साहित्य में रचनाएं लिखी है। जैसे- यशपाल, उपेंद्रनाथ अश्क, डॉ. हरदेव बाहरी, अजीत कौर, प्रेम प्रकाश, स्वदेश दीपक आदि।

पंजाब के अन्य साहित्यकार हैं, जिन्होंने मुलत: पंजाबी में लिखा, किंतु उनकी रचनाएं हिंदी में अनुवादित हुई। या फिर उन्होंने पंजाबी के साथ-साथ हिंदी में भी लिखा। जैसे- पाश, नानक सिंह, शिव कुमार बटालवी, दलीप कौर तिवाणा आदि।

साहित्यिक रचनाओं के साथ-साथ पत्रकारिता, दूरदर्शन, शिक्षा संस्थान, डिजिटल मीडिया आदि का भी योगदान रहा है। पंजाब में अनेक पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं, जिसके माध्यम से हिंदी का विकास हो रहा है। इन पत्रिकाओं ने पंजाब के कवियों को साहित्यक मंच प्रदान किया है। पंजाब में कई समाचार पत्र भी प्रकाशित होते हैं, जिस के माध्यम से बहुत-से लोग हिंदी से परिचित होते हैं। दूरदर्शन भी पंजाब में हिंदी के विकास के लिए बहुत योगदान देता रहा है और आज भी योगदान दे रहा है ।दूरदर्शन पंजाब में हिंदी को लोकप्रिय बनाने के साथ-साथ शिक्षा के लिए और मनोरंजन के लिए उपयोग होता रहा है। अनुवाद कार्य ने भी पंजाब में हिंदी का बहुत विकास किया है। पंजाब के साहित्यकारों की अनेक रचनाएं हिंदी के साथ-साथ अनेक भाषाओं में अनुवादित हुई हैं और हिंदी के लेखकों की बहुत सी रचनाएं पंजाबी के साथ-साथ अनेक भाषाओं में अनुवादित हुई है। जिससे लोगों को एक दूसरे के विचार समझने में एक आसानी हुई है। ऐसे अनुवादित कार्य में लोगों के बीच पुल का काम भी किया है। पंजाब में भारतीय शिक्षण संस्थाओं ने हिंदी भाषा विभाग स्थापित किया है। जिसमें हिंदी विषय पढ़ाया जाता है, और उसमें शोध कार्य भी होते हैं। जिससे हिंदी का विकास हो रहा है।

पंजाब के कुछ कवियों का वर्णन निम्नलिखित हैं, जिन्होंने हिंदी में साहित्यकार रचनाओं की है।

मोहन राकेश का योगदान

मोहन राकेश पंजाब के प्रसिद्ध लेखक रहे हैं। आपने कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, डायरी लेखन, संस्मरण आदि लिखे।

मोहन राकेश की कहानियों की कई विशेषताएं हैं-

- **मध्यवर्गीय जीवन का वर्णन**
  मोहन राकेश की कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन, परिवारों का वर्णन देखने को मिलता है। कहानियों में अकेलापन, बेरोजगारी, आर्थिक समस्याएं भी देखने को मिलती है।
- **मानवीय संबंधों का विघटन**
  मोहन राकेश की कहानियों में मानवीय संबंधों का विघटन भी देखने को मिलता है। आज का मनुष्य, पुत्र, पिता, माता, पत्नी किसी बंधन में बंध कर नहीं रहना चाहता। वह अपने जीवन को प्राथमिकता देता है और अपनी इच्छा अनुसार जिंदगी व्यतीत करना चाहते हैं।

- **मनोवैज्ञानिक विश्लेषण**

मोहन राकेश की कहानियों में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण देखने को मिलता है। उनकी कहानियों के पात्र अकेलापन, तनाव, उनके मन का संघर्ष देखने को मिलता है। उनकी कहानियों के पात्र तनाव से जूझते रहते हैं।

- **सामाजिक परिवर्तन**

मोहन राकेश की कहानी में सामाजिक का मूल्यों का विघटन देखने को मिलता है। उनकी कहानियों में देखने को मिलता है कि नैतिक मूल्यों का विघटन होता जा रहा है। नैतिक मूल्यों के कम होने के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन भी देखने को मिलते हैं।

- **यथार्थवाद**
  मोहन राकेश की कहानियों में यथार्थवाद देखने को मिलता है। वास्तविक जीवन की झलक देखने को मिलती है। मोहन राकेश की कहानियों के पात्र वास्तविक जीवन से संबंध रखते नजर आते हैं।

- **स्त्री की स्थिति**

मोहन राकेश की कुछ कहानियों में स्त्री की स्थिति दयानीय है। किंतु कुछ कहानियों में स्त्री आधुनिक नारी है। जो घर में रहने के बजाय नौकरी पेशा है। वह अपने फैसले लेने में सक्षम है। वह अपने आप को प्राथमिकता देती है। पुरातन सोच के साथ जिंदगी जीने के बजाए आधुनिक/ नए जमाने के साथ जीना चाहती है।

तरसेम गुजराल का योगदान

- **मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति**
  उनकी रचनाओं में मानवीय रिश्तों, प्रेम, पीड़ा, अकेलेपन और संघर्ष का चित्रण मिलता है। वे व्यक्ति के आंतरिक भावों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं।
- **सामाजिक यथार्थ का चित्रण**
  तरसेम गुजराल ने समाज की वास्तविक समस्याओं, विसंगतियों और संघर्षों को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। उनके साहित्य में आम आदमी के जीवन की कठिनाइयाँ और सामाजिक परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।
- **यथार्थवादी पात्र-चित्रण**
  उनके पात्र काल्पनिक न लगकर वास्तविक जीवन से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं। वे समाज के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं और उनके माध्यम से लेखक सामाजिक सच्चाइयों को उजागर करता है।

- **आलोचनात्मक चेतना**
  एक आलोचक होने के कारण उनकी रचनाओं में विश्लेषणात्मक दृष्टि भी मिलती है। वे केवल समस्याओं का चित्रण नहीं करते, बल्कि उनके कारणों और प्रभावों पर भी विचार करते हैं।
- **सरल और सहज भाषा**
  तरसेम गुजराल की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और संप्रेषणीय है। वे जटिल विषयों को भी सहज भाषा में प्रस्तुत करते हैं, जिससे पाठक आसानी से रचना से जुड़ जाता है।
- **समकालीन समस्याओं पर केंद्रित**

उनके उपन्यास और कहानियाँ आतंकवाद, विस्थापन, सामाजिक तनाव, राजनीतिक परिस्थितियों और बदलते जीवन-मूल्यों जैसी समस्याओं को उठाती हैं। विशेष रूप से पंजाब की परिस्थितियों का यथार्थवादी चित्रण उनकी रचनाओं की प्रमुख विशेषता है।

3.निष्कर्ष

इस प्रकार कहा जा सकता है कि पंजाब में हिंदी के विकास में योगदान दिया है। नाथ साहित्य का प्रभाव, सिख गुरुओं की वाणी, संतों की वाणी, वीर काव्य, पंजाब के अनेक साहित्यकार, आर्य समाज, हिंदी भाषा आंदोलन ने हिंदी भाषा और साहित्य को समृद्ध किया। पंजाब के हिंदी का साहित्यकारों के साथ-साथ पंजाबी के मूलतः साहित्याकारों ने भी पंजाबी के साथ-साथ हिंदी में रचनाएं लिखीं। बहुत - सी रचनाओं का हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ, जिसके कारण कृतियां बहुत ही प्रसिद्ध हुई। जैसे अमृता प्रीतम का उपन्यास पिंजर। बहुत-से लेखकों की कृतियां पर फिल्में बनी, कविताएं फिल्मों में गीत बने, जो अमर हो गई।उनकी रचनाओं में मानवीय रिश्तों, प्रेम, पीड़ा, अकेलेपन और संघर्ष का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है। वे व्यक्ति के आंतरिक मनोभावों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

पत्रकारिता, समाचार पत्र के माध्यम से हिंदी भारत के लोगों तक पहुंचने लगी, जिस कारण लोगों ने स्वतंत्रता आंदोलन में भी हिस्सा लिया। पत्रकारिता समाचार पत्र, दूरदर्शन अनुवाद कार्य, डिजिटल मीडिया, शिक्षण संस्था ने भी हिंदी के विकास में योगदान दिया है, जो अमूल्य है।

4.संदर्भ सूची

1. गुप्त, सत्यपाल। पंजाब का हिंदी साहित्य, पैप्सू प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन पटियाला।
2. तिवारी, भोलानाथ। हिंदी भाषा का इतिहास। वाणी प्रकाशन -2018
3. द्विवेदी, हजारी प्रसाद। हिंदी साहित्य की भूमिका। राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,2019
4. द्विवेदी, हजारी प्रसाद। हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास। राजकमल प्रकाशन,1988
5. पंजाबी साहित्य का इतिहास, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला।
6. वर्मा, रामकुमार। हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास।लोक भारती प्रकाशन। पृष्ठ- 39
7. यादव, रमेश कुमार। मोहन राकेश: व्यक्तित्व एवं कृतित्व। गीता प्रकाशन,1986
8. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, भूमिका रामस्वरूप चतुर्वेदी। लोक भारती प्रकाशन। पृष्ठ -024